Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

संस्कृत साहित्य में जनजातीय पात्रों का चित्रण

डॉ पुष्पेन्द्र सेवक
प्राचार्य,
श्री शिवनारायण चौबीसा महाविधालय, सीमलवाडा,
(सम्बद्धता– गो.गु.ज.जा. विश्वविधालय(बॉसवाडा)

शोध आलेख सार– संस्कृत साहित्य में अनेक जनजातीय पात्रो ने चित्रण किया है। एवं कई प्रसंगो में पात्रो, मानवीयता, सामाजिकता, नैतिकता आदि का निर्वहन किया है इन जनजातिय पात्रो का संस्कृत एवं संस्कृति की रक्षा में सराहनीय योगदान रहा है।

मुख्य शब्द – संस्कृत, साहित्य, जनजातीय, पात्र, चित्रण, मानवीयता , सामाजिकता, नैतिकता।

भारत" सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसी वैदिक मान्यताओं के साथ मानव मूल्यों एवं मानवाधिकारों को सामाजिक जीवन का आधार रखने वाला देश है।इस विशाल देश के अलग अलग क्षैत्रो में अलग अलग संस्कृतियॉ है परन्तु वर्षो तक विदेशी शासको के प्रभाव अभी तक यहॉ के जीवन की सामान्य मान्यताओं का दुष्प्रभावी नही कर सका है। इस देश के आम नागरिक की जीवन पद्धति दूसरों को सम्मान देने दूसरों की भावनाओं का आदर करने एवं संतोष तथा सहनशीलता पूर्वक शासकों की स्वार्थपरक नीतियों एवं आर्थिक शोषण का प्रभाव सामाजिक जीवन पर अवश्य पडा है।

जनजातियॉ– भारतीय समाज एक अतिप्राचीन समाज है और जनजातियॉ इसका अभिन्न अंग है भारतीय समाज एवं संस्कृति को जनजातियॉ निराली छवि प्रदान करती है। भारतीय समाज की रचना में जनजातियों की प्रमुख भूमिका है। सामाजिक मानव वैज्ञानिको तथा समाज शास्त्रीयों ने समय समय पर जनजातियों को विभिन्न पदो से सम्बोधित किया है।

जनजाति ऐसे लोगो का समूह है जो किसी निश्चित भू– भाग (सामान्यतः जंगल या पहाड) पर निवास करते है, जिनकी एक संस्कृति होती है।तथा जो आज भी आर्थिक दृष्टि से कॉफी पिछडे हुए है।

जनजाति की संस्कृति– एक जनजाति की सामान्य संस्कृति होती है, जिसके अनुसार उनके रिति–रिवाज, प्रथा,कानून,नियम,खान–पान मूल्य , विश्वास एवं

प्रमुख जनजातियॉ–

भील,भील–गरासीया,डुॅगरी–भील,ढोली–भील,मेवासी–भील,रावल – भील,।डूॅगरी – गरासीया, मांगलीया–गरासीया, कथोड, कटकरी, कोकना कुकनी, कोली, ढेर, टोकरे, कोली, कोलचा, कोलगा, मीणा, नेकदा, मोटानायक, छोटानायक, पटेलिया तथा सहरिया,

संस्कृत साहित्य और जनजातियों का सम्बन्ध– जनजातियों का सम्बन्ध संस्कृत से अतिप्राचीन है। अर्थात वैदिक काल से हि कहॉ जाये तो अतिशयोक्ति नही होगी। संस्कृत ग्रन्थो में पुरातन लेखो में आदिवासिंयो अत्विका और वनवासी भी कहॉ गया है।संस्कृत साहित्य के अनुसार भीलो की उत्पति भील जनजाति की उत्पति के सम्बन्ध में संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत अनेक प्रमाण मिलते है।

संस्कृत साहित्य में भोलो को निषाद तथा शबरी नामक वनीय कबिलाई के रूप में दर्शाया गया है। सम इतिहास व ब्राह्मण ग्रन्थो में उललेख किया गया है कि निषाद मछली के शिकार जैसा निम्नतम व्यवसाय कर रहे थे तब हिन्दू संहिता के निर्माता मनु ने निषाद को अवगत कराया कि उसके पिता ब्राह्मण तथा माता शुद्र हैं। इस सम्बन्ध में अध्ययन वेत्ताओं ने भी महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये।

यथा–

ऊ नमो निषाद अधिपति गुहा राजनिषाद।

निषाद, भीलो की हमारे प्राचीन संस्कृत साहित्य में महाभारत , रामायण, शबरी, घटोत्कच्छ, एकलव्य की कथा, बोद्धकालीन और जैन कालीन कथा साहित्य में भी इसकी चर्चा मिलती है।

हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप के साथ भील लडे थे। राजपुत राजाओं के राजतिलक करने का अधिकार भी इसी जाति को रहा है। किसी समय इस जनजाति की अपनी एक स्वतंत्र सत्ता थी और मध्य भारत में भोल सरदारों के कई छोटे छोटे राज्य फेले हुए थे। कोटा डूॅगरपुर बॉसवाडा भीलवाडा इत्यादी आज भी हमें भीलो के उस काल की यादो को ताजा करते है। धर्म और संस्कृति की दृष्टि से पश्चिमी निमाड क्षैत्र हिन्दू प्रधान हि कहलाएगा क्योकिं जनसंख्या यहॉ हिन्दू समाज की है। अब जैसे जैसे आधुनिकता के प्रभाव से जीवनशैली में परिवर्तनो का सिलसिला निरन्तर जारी है वैसे वैसे पर्वोत्सव का उत्साह कम होता जा रहा है। लेकिन

आदिवासी जन –जीवन में इसका महत्व अब भी बरकरार हैं लोक जीवन को सहज सप्राण बनाये रखने में इन पर्वोत्सव की भूमिका है जो लोक जीवन से विस्मृत नही हो सकती।

जनजातिय पात्र चित्रण/प्रसंग– संस्कृत साहित्य जगत में हि नही अपितु नाट्य जगत में भी अनेक जगह जनजातिय पात्र मिल जाते है जिन्होने साहित्यकार में अपूर्व सहयोग प्रदान किया हैं। प्राचीन कवि कालिदास भास,भामह रूद्रट विशाखदत्त आदि ने अपने काव्य प्रसंगो में जनजातिय पात्रों का चयन किया है। जिसमें मुख्यतः किरात वेशधारि भगवान शिव का वर्णन वनेचर आदि अभिज्ञान शाकुन्तलम् में धीवर मछुआरे का वर्णन मुद्राराक्षसम् नाटक में चन्द्रगुप्त मलयकेतु (पर्वतवासी)मृच्छकटिकम में शकार का वर्णन प्राप्त होता है। अब हम कमशः तत्कालिन जनजातीय पात्रों का चित्रण एवं यथासम्भव कुछ प्रसंगो को समझने का प्रयास करते है।

अभिज्ञान का –धीवर– अभिज्ञान शाकुन्तलम के पंचम अंक में मछुआरे का प्रसंग आता हे।आरक्षी एक मछुआरे की प्रताडना करते है। मछूआरा निम्न जाति में उत्पन्न होने से राजा के सेनिको के समक्ष असहज महसूस करता हैं उस पर राजकिय मुद्रा की चोरी का आरोप लगाया जाता है।

वस्तुतः उसने एक मछली पकडी थी जिसके पेट में यह मुद्रिका प्राप्त हुई थी।यही दुष्यन्त की मुद्रिका है जो स्नान करते समय शुकावतार तीर्थ में जलवंदना के समय शकुन्तला के हाथ से गिरपडी थी।धीवर जब इसे लेकर बाजार में बेचने जाता है। तब उसे नगररक्षक पकड लेते है एवं प्रताडित करते है। तब वह अपने वंशपरम्परा से चले आ रहे कार्य की प्रशंसा करते हुए इस प्रकार प्रत्युत्तर देता है।

सहजं किल यद्विनिन्दितं न।
तु तत् कर्म विवर्जनीयकम्।
पशुमारणकर्मदारूणः।।
अनुकम्पामृदुकोऽपि श्रोत्रियः।।

अर्थात निन्दित होता हुआ भी जो काम जिसकी वंश परम्परा से चला आ रहा हो उसे नही छोडना चाहिए।दया कोमल ह्दय होते हुए भी श्रोत्रिय ब्राह्मण यज्ञ में पशु हत्या करने के समय निष्ठुर ही हो जाते है।

कैदी धीवर को राजा के पास लाया जाता है। अपने नाम की अँगुठी देखते ही राजा को शकुन्तला से विवाह की घटना स्मरण हो जाती है। अन्त में राजा धीवर को पुरस्कार देकर विदा करते है।

यहॉ स्पष्ठ होता है। मछुआरे ने स्वंय की वंश परम्परा रूपी कार्य की प्रशंसा की एवं कानून के समक्ष भी सच्चाई बताकर राजा को सन्तुष्ट किया राजा ने भी धीवर मछुआरे की सत्यनिष्ठा को देखते हुए प्रसन्न होकर धीवर को पुरस्कृत किया। दोनो का अर्थात तत्कालिन राजा–प्रजा एवं प्रशासन का समन्वय दिखा है। अभिज्ञान में हि प्रसंगवश राजा शकुन्तला , शारद्वत,गौतमी को वनवासी कहकर सम्बोधित करता है। तब शकुन्तला राजा दुष्यन्त की कटु शब्दो में आलोचना करती है।

यतो द्वे एव युवामारण्यके इति।

मुद्राराक्षस के (चन्द्रगुप्त एवं मलयकेतु)

मुद्राराक्षस नाटक में चन्द्रगुप्त के चरित्र का विकास उस रूप में नही हुआ है। जिस रूप में एक मोर्य सम्राट का होना चाहिये।

शिष्य चन्द्र गुप्त का अपने गुरू चाणक्य में विश्वासपूर्ण और सर्वात्मना है। सारे नाटक के अन्दर चन्द्रगुप्त के लिए वृषला शब्द का प्रयोग हुआ हैं। जिसके आधार पर कतिपय विद्वानो ने उसे शुद्रकुल्पोत्पन माना है।

पतिं त्यक्तवा देवं भुवनपतिमुच्चैरभिजनं।
गताछिद्वेण श्री र्वृषलमविनीतेव वृषली।
एक राज्य के विषय में चन्द्रगुप्त का विचार है।
प्रसंग वश चन्द्रगुप्त का एक राज्य के प्रति श्रेष्ठ विचार है।
"राज्य हि नाम राजधर्मानुवृत्तिपरस्य नृपते–र्महदप्रीतिस्थानम्"

प्रसंग वश चन्द्रगुप्त का एक राज्य के प्रति श्रेष्ठ विचार है– अर्थात् यदि कोई राजा राज्य धर्मो का पालन करना चाहता है तो राज्य उसके लिये सुख के स्थान पर दुःख की सृष्टि करने वाला है। इसी तरह मलयकेतु भी एक पर्वतीय राजकुमार है। इसके पिता की मृत्यु विष कन्या के द्वारा हुई थी। चन्द्रगुप्त निम्न जाति से उत्पन्न होता हुआ भी महत्वाकांशी है उसका चरित्र उज्जवल है सुरक्षित है और योग्य है इसके विपरित पर्वत निवासी मलयकेतु अयोग्य ह दुरभिगामी है। कमजोर चरित्र का और मिथ्या हठी है।राक्षस का उसके प्रति प्रेम पुत्र के समान है।

मृच्छकटिकम् में शकार– मृच्छकटिकम का शकार निम्न कूलोत्पन्न पात्रमाना जाता है। क्योकिं चारूदत्त यदि गुणो की निधि है तो शकार में गुणो की कुछ कमियां है। शकार के चरित्र के विषय में कहा है। कि

मदमूर्खताभिमानी दुष्कुलतैश्वर्य संयुक्तः।
सोऽयमनूढाभ्राता राज्ञः श्यालःशकार इत्युक्तः।।

मृच्छकटिकम के शकार का आचरण अलग ही है यह राजा पालक की स्त्री का भाई है। एक प्रकार से यह मनोरंजक पात्र है। सम्पूर्ण नाटक में कही स्वंय को ज्ञाता तो कहो बोद्व धर्मपालक कही स्वंय को संगितज्ञ बताकर सूरीली आवाज में गाने का कार्य करता है।

स्थावरक चेट गाडी ले जाने कि सूचना देता है। तब यह चार दीवारी को पार कर ही गाडी ले आने की जिद करता है।

इसे गाडी टुटने बैल मरने और स्थावरक के मरने की कोई चिन्ता नही होती है।

इस प्रकार यह स्पष्ठ हो जाता है कि शकार एक दुष्ट, धुर्त, मूर्ख और घमण्डी पात्र है। यह मूर्खता और कुटिलता की मूर्ति है। किन्तु यह अपने इन व्यवहारो से दर्शको को प्रभावित करता है। आज के खलनायक के द्वष्टिकोण से इसका चरित्र उत्कृष्ट कोटि का माना जा सकता है।

किरातार्जुनीयम् का वनेचर– किरातार्जुनियम महाकाव्य के प्रथम सर्ग का प्रारम्भ वनेचर के प्रवेश से होता है। वह अपने विशिष्ठ प्रतिभा द्वारा सहृदय सामाजिको के हृदयो को सहज हि आकर्षित कर लेता है। उसमें उत्तम स्वामी भक्ति सत्य एवं योग्यताएँ कुट कुट कर भरी पडी है।

वनेचर में व्यवहार कुशलता स्पष्ठ दिखाई देती है। वनवासी होने पर भी शत्रु विषयक समाचार को अत्यन्त कुशलतापूर्वक युधिष्ठिर के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

एक राजा के साथ किस प्रकार शिष्टाचार पूर्वक वार्तालाभ करना चाहिये इस बात को वह अच्छी तरह जानता है। वह सेवक तथा स्वामी विषयक सम्पूर्ण औपचारिकता का निर्वाह करता है।

यथा–कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे,
जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः।
न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं,
प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।।

इस प्रकार संस्कृत साहित्य में अनेक जनजातीय पात्रो ने चित्रण किया है। एवं कई प्रसंगो में पात्रो , मानवीयता , सामाजिकता, नैतिकता आदि का निर्वहन किया है इन जनजातिय पात्रो का संस्कृत एवं संस्कृति की रक्षा में सराहनीय योगदान रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1- उप्रेति, हरिश चन्द्र, भारतीय जनजातियॉः संरचना एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर
2- जोशी, यशवन्त कुमार, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, कमलबुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, उदयपुर
3- जोशी, यशवन्त कुमार, भारतीय संस्कृति के तत्व, कमलबुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, उदयपुर
4- जोशी, यशवन्त कुमार, किरातार्जुनीयम् प्रथम सर्ग, कमलबुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, उदयपुर
5- त्रिपाठी ,प्रो जयशंकरलाल मृच्छकटिकम्, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
6- मालवीय,डॉ सुधाकर, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
7- विधालंकार, डॉ निरूपण, मुद्राराक्षसम्, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ
8- शर्मा , राजीबलोचन, जनजातीय जीवन और संस्कृति, सहचारी प्रकाशन, प्रसारण, कानपुर
9- शास्त्री, डॉ. राकेश– अभिज्ञानशाकुन्तलम्
10- डॉ. प्रतिमा राजहंस पब्लिशिंग हाउस, उदयपुर